Established: 2023

BUNDELKHAND RESEARCH JOURNAL (BRJ)
(An Interdisciplinary, Open Access, Biannual, Multilingual and Peer-Reviewed e-Journal)
Maharaja Chhatrasal Bundelkhand University, Chhatarpur, (Madhya Pradesh) India
(A State Government University)
2025, Vol. 3, Issue 2
Website: https://brj.mcbu.ac.in/

ISSN: 2584-0533

"टीकमगढ़ एवं निवाड़ी जिले में महिलाओं के आर्थिक विकास में स्व-सहायता समूहों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

श्रीकान्त राय एवं प्रभा अग्रवाल

वाणिज्य अध्ययन शाल एवं शोध केन्द्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड वि.वि. छतरपुर (म.प्र.)

ARTICLE INFO

Paper ID

BRJFLCM25803501

Corresponding Author

Shrikant Rai

Email

shrikant.bibbi1990@gmail.com

DOI

https://doi.org/10.65554/brj.v3i2.04

Received: 10-06-2025

Revised: 25-06-2025

Accepted: 30-12-2025

Published: 31-12-2025

ABSTRACT

म.प्र. के टीकमगढ़ और निवाड़ी जिले में, महिला स्वसहायता समूह सकारात्मक परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में उभरे हैं। इन समूहों के गठन ने महिलाओं को उनके कौशल को बढ़ाने, वित्तीय संसाधनों तक पहुँचने और सामूहिक रूप से सामान्य मुद्दों को संबोधित करने के लिए मंच प्रदान करके सशक्त बनता है। समूहों के भीतर कौशल विकास की पहल ने महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देते हुए विभिन्न आय सजृन गतिविधियों का पता लगाने में सक्षम बनाया है। वित्तीय समावेशन इन स्वयं सहायता समूहों का एक प्रमुख पहलू है, जिसमें सदस्य एक सामान्य निधि में योगदान करते है, और ऋण सुविधाओं तक पहुँचते है। इसके द्वारा महिलाओं की वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ है। महिलाओं के स्व सहायता समूहों ने पारंपरिक सामाजिक बाधाओं को पार करते हुए समुदाय और आपसी समर्थन की भावना को सुगम बनाया है। इसके द्वारा आत्म सम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाने में योगदान दिया है। यह विश्लेषणात्मक अध्ययन टीकमगढ़ और निवाड़ी जिलों में महिला स्वयं सहायता समूहों की परिवर्तनकारी भूमिका को रेखांकित करता हैं।

Keywords: स्वसहायता समूह, सशक्तिकरण, स्वतंत्रता, वित्तीय संसाधन, आय सृजन।

प्रस्तावना

महिला स्वसहायता समूह महिलाओं को सशक्त बनाने और सामाजिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में इन समूहों के महत्व को समझने के लिए मंच प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं की बहुमुखी चुनौतियों का समाधान करना हैं विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के लिए यह अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है। (Ajith B, Satyanarayan K, Jagadeeswary V, Rajeshwari Y B, Veeranna K C & Harisha M., 2017)

स्वसहायता समूह, कौशल विकास और आय सजृन को सुविधाजनक बनाने में महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डालता है। सूक्ष्म उधमों से

लेकर सामुदायिक पहलो तक, इन समूहों द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियों की जाँच की जाती है की कैसे सामान्य निधियों का निर्माण, ऋण सुविधाओं तक पहुँच और परिक्रमी निधियों का उपयोग इन समूहों में शामिल महिलाओं की आर्थिक लचीलापन में योगदान देता है। (Rao C H., 2002) महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों का सामाजिक आयाम भी उतना ही महत्वपूर्ण है। नियमित बैठकों ज्ञान साझकरण, सामूहिक समस्या समाधान के माध्यम से, ये समूह समुदाय और आपसी समर्थन की भावना पैदा करते है। इन समूहों के भीतर सामाजिक गतिशीलता को समझना अंतदृष्टि प्रदान करता है। कि वे न केवल आर्थिक संस्थाओं के रूप में बल्कि एकजुटता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए आधार प्रदान करने का कार्य करते है। (Archana & Sinha., 2004)

शोध की आवश्यकता

1. टीकमगढ़ व निवाड़ी जिले में महिला स्वसहायता समूह की कार्यप्रणाली की जानकारी हेतु।

2. महिला स्वसहायता समूह का कार्य निष्पादन की जानकारी

शोध के उद्देश्य

1. महिला स्वसहायता समूह का समाज के आर्थिक विकास में योगदान को जानना।

2. महिला स्वसहायता समूह के द्वारा वित्तीय समावेशन की जानकारी प्राप्त करना।

3. महिला स्वसहायता समूह की कार्यप्राणाली व कार्य निष्पादन का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1. Ho=महिला स्वसहायता समूह से महिलाओं का सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण सार्थक रूप से संभव नहीं हो पाया है।

2. Ho=महिला स्वसहायता समूह के द्वारा वित्तीय समावेशन को सार्थक रूप से बढ़ावा नहीं मिलता है।

शोध का क्षेत्र

इस शोधकार्य हेतु म.प्र. का टीकमगढ़ निवाड़ी जिला लिया गया है। तथा दैव निर्देशन विधि से स्वसहायता समूह से जुड़ी महिलाओं से 200 महिलाओं को प्रीसिजन विधि से छोटे न्यादर्श के माध्यम से लिया गया है।

शोध संरचना

शोध संरचना निम्न प्रकार है।

1. समस्या की पहचान व शोध की आवश्यकता
2. साहित्य पुनरावलोकन
3. उद्देश्यों का निर्धारण
4. परिकल्पना का निर्माण
5. शोध संरचना
6. समंकों का संकलन व विश्लेषण
7. परिकल्पना परिक्षण
8. निष्कर्ष, अनुशंसा व सुझाव

समंको का संकलन

समंको का संकलन व विश्लेषण एक महत्वपूर्ण कार्य है इसके बिना शोध कार्य सम्पन्न नहीं होता है प्रस्तुत शोधकार्य के प्राथमिक समंको का प्रयोग किया गया है।

समंको का विश्लेषणात्मक अध्ययन

	संख्या	प्रतिशत
ग्रामीण महिला	135	67.5%
शहरी महिला	65	32.5%
कुल	**200**	**100%**

सारणी क्रमांक-1 उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

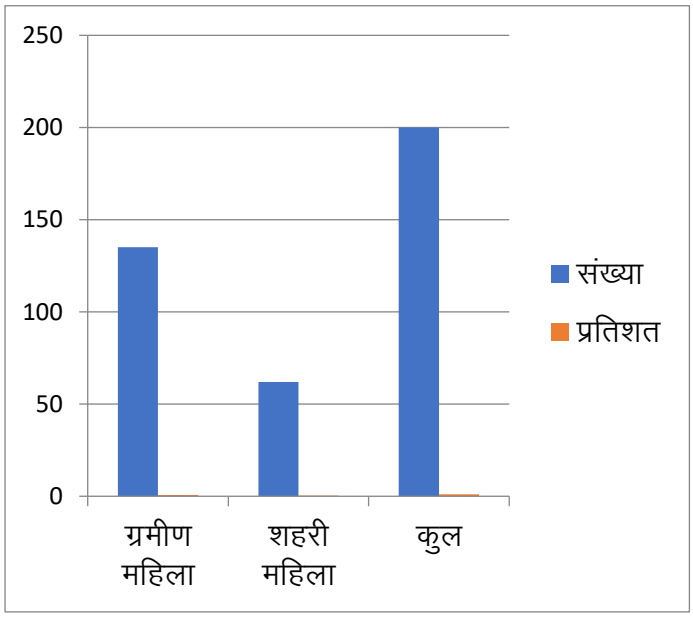

दण्डआरेख क्रमांक- 1

स्त्रोत - प्राथमिक समंक सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 के अध्ययन पश्चात् कहा जा सकता है की उत्तरदाताओं के वर्गीकरण में ग्रामीण महिला 67.5% व शहरी महिला में 32.5% है। जो दर्शाता है की स्वसहायता समूह ग्रामीण इलाके में अधिक सक्रियता पूर्वक कार्यरत है।

	संख्या	प्रतिशत
0-25 वर्ष	20	10%
25-35 वर्ष	40	20%
35-45वर्ष	60	30%
45 वर्ष से अधिक	80	40%
कुल	**200**	100%

सारणी क्रमांक-2 आयु समूह के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

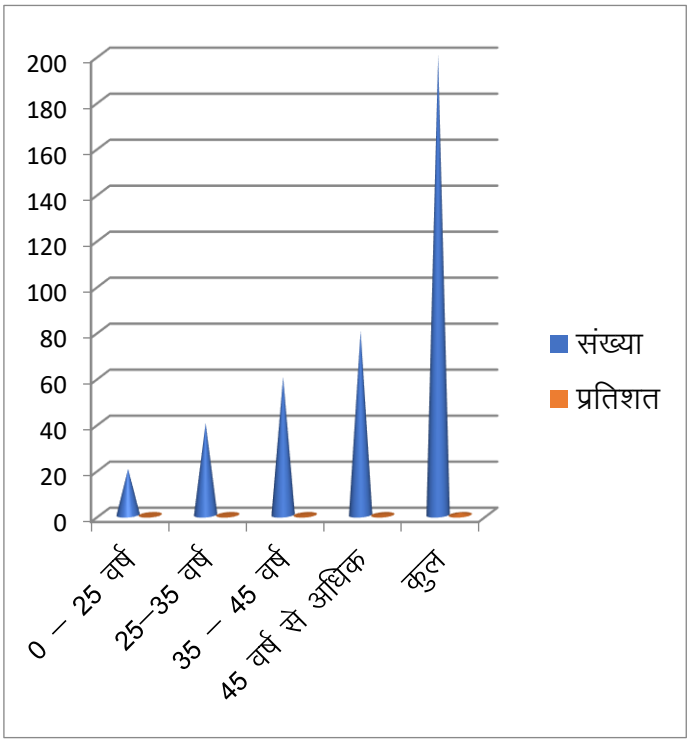

दण्डआरेख क्रमांक- 2

स्त्रोत - प्राथमिक समंक सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 के अध्ययन पश्चात् कहा जा सकता है की आयु समूह के आधार पर उत्तरदाताओं में 0-25 वर्ष के आयु समूह में 10%, 25-35 वर्ष के 20%, 35-45 वर्ष के 30%, व 45 वर्ष से अधिक के 40%, उत्तरदाता है। इससे स्पष्ट होता है कि 35 वर्ष से अधिक आयु समूह की महिलाओं द्वारा स्वसहायता समूह का उपयोग ज्यादा किया जाता है।

घटक	प्रतिशत
वित्ती समावेशन	3.7
कौशल विकास	3
सामाजिक सहयोग	3.9
निर्णय में सहायक	3.2
उद्यमिता को बढ़ावा	3.3
जागरूकता को बढ़ावा	3.2
सूचनाओं की जानकारी	4
सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति	4

सारणी क्रमांक-3 महिला स्वसहायता समूह से महिलाओं का सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण सार्थक रूप से संभव हो सका है घटकों के आधार पर भारित औसत माध्य की संक्षिप्त सूची

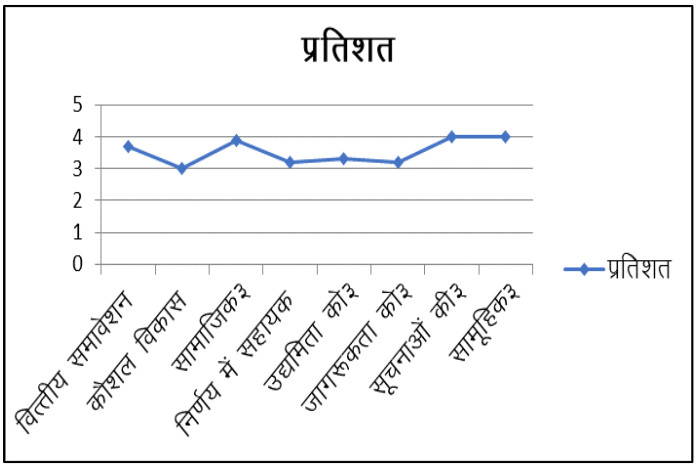

दण्डआरेख क्रमांक- 3

स्त्रोत - प्राथमिक समंक सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3 के अध्ययन पश्चात् कहा जा सकता है की महिला स्वसहायता समूह से महिलाओं का समाजिक आर्थिक सशक्तिकरण सार्थक रूप से संभव हो सका है के घटको की भारित औसत माध्य की संक्षिप्त सूची के आधार पर क्रमशः वित्तीय समावेशन का भारित औसत माध्य 3.7, उद्यमिता को बढ़ावा 3.3, जागरूकता को बढ़ावा 3.2, सूचनाओं की जानकारी 4 सामूहिक सौदेबाजी की शथ्क्त 4, भारित औसत माध्य रहा है। जो दर्शाता है की स्व सहायता समूह का महिलाओं के सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण से अधिकांश उत्तरदाता संतुष्ट है।

घटक	भारित औसत माध्य
बचत को बढ़ावा	3.6
साख को बढ़ावा	3.9
ब्याज मुक्त ऋण	3.1
वित्तीय साक्षरता	3.3
माइक्राफाइनेंस	3.7
संपत्ति निर्माण	3.8
बीमा कवरेज	3.9
डिजिटल वित्तीय सेवाएँ	3.2
समूह की गतिशीलता	3.6
सशक्तिकरण को बढ़ावा	3.1

सारणी क्रमांक - 4 महिला स्वसहायता समूह के द्वारा वित्तीय समावेशन को सार्थक रूप से बढ़ावा मिला है के घटकों के आधार पर संक्षिप्त सूची

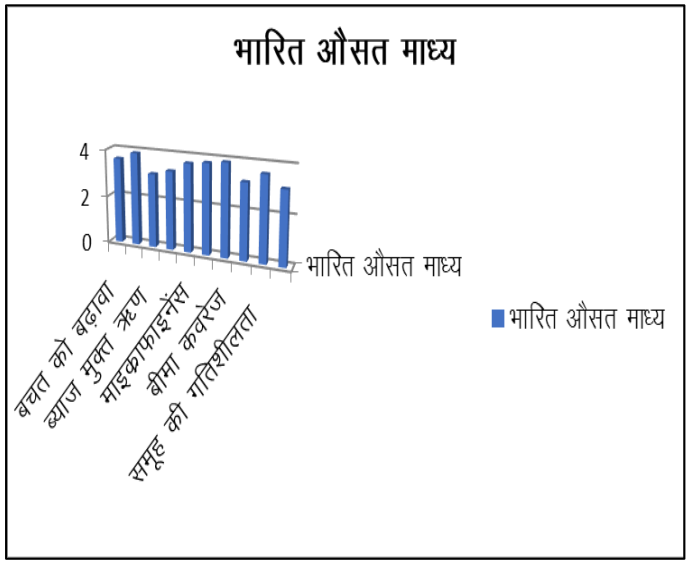

दण्डआरेख क्रमांक- 4

स्त्रोत - प्राथमिक समंक सर्वेक्षण के आधार पर सारणी क्रमांक 4

उपरोक्त सारणी क्रमांक 4 के अध्ययन पश्चात् कहा जा सकता है की महिला स्वसहायता समूह के द्वारा वित्तीय समावेशन को सार्थक रूप से बढ़ावा मिलता है के आधार पर भारित औसत माध्य की संक्षिप्त सूची पर क्रमशः भार इस प्रकार है बचत को बढ़ावा का भार 3.6, साख को बढ़ावा 3.9, ब्याजमुक्त ऋण 3.1, वित्तीय साक्षरता 3.3, माइक्राफाइनेंस 3.7, संपत्ति निर्माण 3.8, बीमा कवरेज 3.9, डिजिटल, वित्तीय सेवाएँ 3.2, समूह की गतिशीलता 3.6, सशक्तिकरण को बढ़ावा का भार 3.1 है। जो दर्शाता है की स्वसहायता समूह से महिलाओं की वित्तीय स्थिति सृदृढ़ हुई। पहले से सशक्त हुई है व ये स्व सहायता समूह महिलाओं को वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक हुई है।

परिकल्पना परीक्षण

1. Ho= महिला स्वसहायता समूह से महिलाओं का सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण सार्थक रूप संभव नहीं हो पाया है।

परिकल्पना परीक्षण	**परिगणित मूल्य**	**सारणी मूल्य**
काई वर्ग परिक्षण	1.24	14.067

सारणी क्रमांक -5

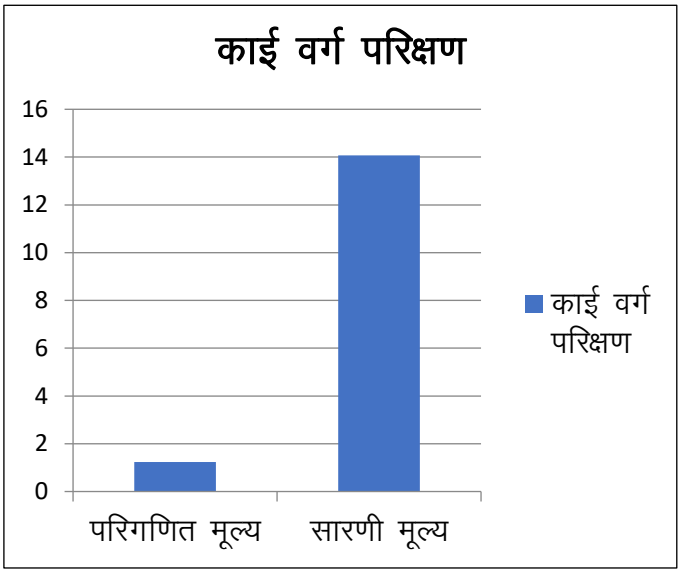

दण्डआरेख क्रमांक- 5

स्त्रोत - सारणी क्रमांक 3 के आधार पर

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1.5 के अध्ययन पश्चात् कहा जा सकता है की 0.95% क्रांतिक मान व 0.05% सभाज्य विम्रम के आधार पर $9df$ के लिए पगिणित मूल्य 1.24 व सारणी मूल्य 14.067 है अर्थात् स्पष्ट होता है की हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है अर्थात महिला स्वसहायता समूह से महिलाओं की सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण सार्थक रूप से संभव हो पाया है।

2. Ho= महिला स्वसहायता समूह के द्वारा वित्तीय समावेशन को सार्थक रूप से बढ़ावा नहीं मिलता है।

परिकल्पना परीक्षण	परिगणित मूल्य	सारणी मूल्य
काई वर्ग परिक्षण	0.92	16.92

सारणी क्रमांक - 6

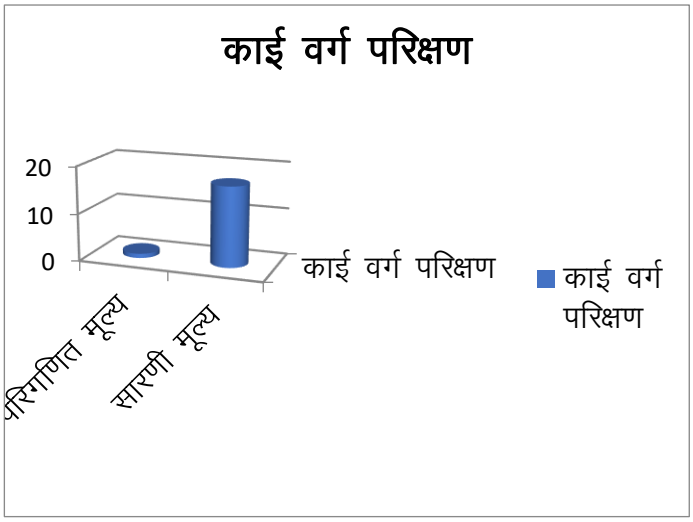

दण्डआरेख क्रमांक- 6

स्त्रोत - सारणी क्रमांक 4 के आधार पर

उपरोक्त सारणी क्रमांक 6 के अध्ययन के पश्चात् कहा जा सकता है की $9df$ के लिए परिगणित मूल्य 0.92 व सारणी मूल्य 16.92 है जो दर्शाता है की हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है अथात् महिला स्वसहायता समूह के द्वारा वित्तीय समावेशन को सार्थक रूप से बढ़ावा मिलता है।

सीमाएँ/अनुसंशाएँ

1. स्व सहायता समूहों की प्रमुख समस्या संसाधनों की कमी है जैसे पूँजी, तकनीकी ज्ञान, प्रशिक्षण व कौशल में कमी इनकी कार्य क्षमता को कम करती है

2. सामूहिक निर्णय लेना कठिन कार्य है। सदस्यों के मतभेद अधिक होती है।

3. समूह के सदस्यों सक्रियता व सहभागिता में कमी लक्ष्य प्राप्ति को कठिन बनाती है।

सुझाव

1. समूह के सदस्यों की सक्रियता को बढ़ावा देने के लिए नियमित बैठके आयोजित की जानी चाहिए।

2. सदस्यों को नए कौशल सिखाने और उन्नति का अवसर प्रदान करने के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

3. समूह के संसाधनों की समीक्षा कर उसके सुधार के लिए प्रयास किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है की स्वसहायता समूह की कार्यक्षमता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण कदम आवश्यक है। ताकि समूह को संगठित और प्रबिधित करने के लिए विशेषता और प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यह सदस्यों को सही दिशा में ले जाने और समूह के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है। सामूहिक संघर्षो के समाधान के लिए संगठन को सक्रियता और सहयोग की दिशा में कार्य करना चाहिए। इससे समूह के सदस्यों के बीच विश्वास और एकता बनी रहती है। यह ना केवल कार्य प्रक्रियाओं की नियमित माँनिटरिंग और अध्ययन की आवश्यकता है। ताकि स्वसहायता समूह चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो सके। (Banerjee T., 2006). अतः कहा जा सकता है स्वसहायता समूह के कार्य प्रक्रियाओं का विश्लेषण हमें समृद्धि और सफलता की दिशा में आगे बढ़ने में मार्गदर्शन करता है।

सन्दर्भ

1. Ajith B, Satyanarayan K, Jagadeeswary V, Rajeshwari Y B, Veeranna K C and

Harisha M. (2017). Problems faced by Self Help Groups members among SHGs in Karnataka. International Journal of Science, Environment. 6 (2): 1080 – 5

2. Rao C H. (2002). Role of SHG and DWCRA in economic and social empowerment of women and ecological development. New Delhi: Serials Publications.
3. Archana and Sinha. (2004). Microfinance for women's empowerment: a perspective. Kurukshetra. April: pp.31.
4. Banerjee T. (2006). Economic impact of Self-Help Groups: A case study. Journal of Rural Development. 28(4): 451-67.
5. Kumar S. (2012). Capacity building through women's groups. Journal of Rural Development.
6. Ritu J, Kushawaha R K, and Srivastava A K. (2003). Socio economic impact through Self Help Groups. Yojana. 47(7): 11-12.
7. Uma D K and Narasaiah L. (2017). Women's empowerment through Self Help Groups: An empirical study in Kurnool district of Andhra Pradesh. International Journal of Applied Research. 3(1): 101-5.
8. Vijay D K. (2001). Empowerment of women through Self Help Groups. Ashwatha. l (3): 11-13.
9. Yadav R, Sagar M P, and Yadav J. (2016). Performance of dairy-based women's Self-Help Groups at the group level in Rewari District of Haryana. International Journal of Humanities and Social Sciences. 6(1): 65-72.